भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-13, अंक-4 गुरुवार, 26 अप्रैल' 90	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

प.पू स्वामिश्री की जयंती के अवसर पर.....

प्रकृतिपुरुष से पर चिदाकाश की चैतन्य भूमिका में अखंड रहकर अनेक जीवों के कल्याण हेतु मानव देह में विचरते हुए गुणातीत संतस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की जयंती पर उन्हें हम सभी के करोड़ों वंदन.....निःस्वार्थ वात्सल्यभाव की पवित्र गंगा बहा कर अनेक चैतन्यों को माया से पार ले जाने वाला निरपेक्ष कल्याणदाता.....संबंध में आये चैतन्यों का 'माँ' की तरह जतन करके आत्मा का उत्थान करके सच्चा प्रकाश देने वाला पथप्रदर्शक....प्रभु के अखंड आनंद में रहती उस अलमस्त मूर्ति के जो-जो भी दर्शन करता है उस व्यक्ति का अंतर अपने आप समर्पित हो जाने का संकल्प कर लेता है....स्वयं को सनाथ महसूस करता है.....!!!

प्रभु हम पर जब अंतर से राजी हो तब सच्चे संत का हमारे जीवन में योग देता है.....उसके साथ हमारी प्रीति कराता है, खूब करुणा करके उसके अमूल्य दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देता है और वह सच्चा संत ही हमारे जीवन में यह विवेक प्रकटाता है कि इस धरती पर क्या करने आये हैं और क्या कर रहे हैं?

इस दृष्टि से यदि देखें तो हम प्रभु को जितना भी धन्यवाद दें उतना कम है। क्यों?– कि हमारे जीवन में तो प्रभु के अखंड धारक–मूर्तिस्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसाद स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, पू. साहेब जैसे सच्चे संत केवल आये ही नहीं बल्कि हमारी बुद्धि के तर्को के मुताबिक हमारे ही स्तर पर आकर उनके अनुभव कराके हमसे प्रीति करके अपनी पहचान भी कराई.....युगों-युगों से पृथ्वी पर दिव्य शक्तियों का अवतरण होता आया है, परन्तु हर युग में जीव अपने मन-बुद्धि, स्वभाव, प्रकृति, अहंता-ममता के ही जालों में फंसे रहने के कारण मानव स्वरूप में प्रकट इन दिव्य शक्तियों का स्वीकार नहीं कर पाया–जैसे कि कृष्ण को ग्वाला समझकर, राम को वनवासी समझकर हर युग में

मानव ने भूल की है.....बल्कि आज, गुणातीत स्वरूपों के रूप में हमें साक्षात् भगवान मिले हैं यह हमारे जीव में माना गया है वही कमाल की–अरे– सौभाग्य की बात नहीं क्या?

परम भागवत् संत प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को गुरु पू. महेश्वरानंदस्वामी (कनखल आश्रम, हरिद्वार) ने आशीर्वाद दिये थे ''तुम्हें एक ऐसे निष्क्रोधी और पूर्ण संत मिलेंगे, जो तुम्हें निष्क्रोधी व पूर्ण बनायेगा।''

प.पू. स्वामीजी पूर्वाश्रम में अपने बहनोई प.भ. मणीलालजी के घर पर रहकर पढ़ाई करते थे। गुरुहरि योगीजी महाराज मणीलालजी के घर पर पधरामनी करने आये। उस समय प.पू. स्वामिजी को स्वामिनारायण सम्प्रदाय व संतों के प्रति कोई ऐसा सद्भाव नहीं था, सो योगीजी महाराज के दर्शन करने की वे जरा सी भी इच्छा नहीं रखते थे। पर गुरुहरि योगीजी महाराज तो पहचानते थे! योगीजी महाराज ने सामने से स्वामिजी को बुलाया व हाथ जोड़कर कहा : ''तुम्हारे गुरु ने तुम्हें जो आशीर्वाद दिये थे, वह पूरा करने मुझे श्रीजी महाराज ने अक्षरधाम से यहां भेजा है। और अब तक मुझसे, संतों से कोई भूलें हो गई हों उसके बदले सबकी तरफ से मैं माफी मांगता हूँ।''

प.पू. स्वामिजी कई बार इस प्रसंग को याद करते हुए कहतें हैं कि बस उस दिन से योगीजी महाराज मेरे दिल में बस गये! योगीजी महाराज का दासत्व, भक्तिभाव व निर्मानीपन मेरे हृदय को छू गया....योगीजी महाराज उस दिन अपने इस पनौते पुत्र के जीव में बैठे और इस शिष्य ने भी सरलता से स्वयं को समर्पित कर दिया! आज प.पू. स्वामिजी गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति अपनी भक्ति अदा करने अनथक् परिश्रम कर रहे हैं....निरंतर परब्रह्म को अखंड धारण करके संबंध में आने वाले हरेक को मूर्ति में खींचकर, स्वयं बल देकर उसके इन्द्रियां अन्तःकरण को दिव्यता में पलटा कर उसका समग्र तंत्र प्रभुमय ही बना देते हैं। जिसके पास अमृत है वही दूसरों को अमृतपान करा सकता है न! ठीक उसी प्रकार जिसके पास अखंड प्रभु है वही प्रभु बक्षीश दे सकता है। जो स्वयं आनंद रहता है वही दूसरों को खुले दिल से आनंद बांट सकता है... जिसकी स्वयं की इन्द्रियां– अन्तःकरण का प्रवाह पवित्र हो वही दूसरों के इन्द्रियां अन्तःकरण का प्रवाह प्रभु सन्मुख कर सकता है....जिसकी स्वयं की आंख पवित्र हो वही सामने वाले की आंखों में से वृत्तियों का जहर चूस कर पवित्रता प्रगटा सकता है... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी में हम सभी ने इन गुणों का सम्यक् दर्शन किया है। जैसे चिंतामणि देखने में सामान्य पत्थर जैसी लगती है, वैसे ही प्रभु रखे ऐसे पवित्र संत सामान्य मानव की तरह खाते हैं, पीते है, सोते हैं मानव मर्यादा में रहकर ही हर क्रिया करते हैं, पर हमारी हर क्रिया हेतुलक्षी होती है और उनकी क्रिया चैतन्यलक्षी....संबंध में आई चेतनाओं के उर्ध्वगामी विकास–आत्यंतिक कल्याण के लिए होती है। सो इन्हें पहचानने चर्म चक्षु नहीं, अन्तर के चक्षु चाहिये। आज सहज में ही वे हमें भगवान के निरंतर सुख, शान्ति, आनंद का भोक्ता बनाना चाहते हैं।

ऐसे भगवत्स्वरूप विभूति की जयंती हम कैसे मनायें और उन्हें क्या भेंट हम दे सकते हैं? जीव की ताकत भी क्या? महिमा भरे दिल से उनके व उनके संबंधवालों के गुण गायेंगे तो वह हमें निर्गुण करके माया की सात जड़कोटि से ऊपर ले जायेंगे। उनके अभिप्राय को समझ लेंगे तो भी हमारा

मनुष्य जन्म सार्थक हो जायेगा...भीष्म पितामह, आचार्य द्रोण, सद्. कृपाचार्य खूब ज्ञानी होते हुए भी भगवान कृष्ण का अभिप्राय न समझर धर्म का साथ नहीं दे पाये....वैसी ही भूल हम ना करें। दिल की सच्चाई से प्रार्थना करें कि अनुभव होने के बाद भी आपके स्वरूप में हमें जो मनुष्यभाव आता रहता है—वह दिव्यभाव में पलटा देना....हम जानते हैं कि आपको अभाव-अवगुण, भावफेर बिल्कुल पसंद नहीं, पर अपनी ही कुछ जड़ता के कारण हम छोड़ नहीं पाते....आपको हमारे मन-स्वभाव की आदतों से दुश्मनी है वह समझ पायें। आपको हममें सुरुचि व आत्मीयता प्रगटाने का अत्यंत उमंग है....तो अब आपको साथ दे पायें, आपके परिश्रम को समझे....इतनी करुणा आप अपनी जयंती पर जरूर से हम सब पर करोगे न? हे स्वामी ! हम ऐसा जीवन जीयें कि आपको इस धरती पर इसी देह में हम सब के लिये अधिक से अधिक रहने का मन हो जाये यही आपकी जयंती के मंगल अवसर पर अंतर की आरजू !

✸ ✸ ✸ ✸

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी

एक बार जूनागढ़ मंदिर निर्माण की सेवा में जाने की बात सामने आयी, तब महाराज ने बड़े-बड़े सद्गुरुओं को बुलाकर बात करी कि 'हमें जूनागढ़ में मंदिर करना है बोलो, जूनागढ़ जाने कौन तैयार है? परन्तु महाराज के साथ रहने का लालच, जूनागढ़ जाने का कठिन रास्ता व हिंसक जानवरों का डर एवं जूनागढ के खराब पानी से तबियत बिगड़ने का डर—इन सब विचारों के कारण कोई भी तैयार नहीं हुआ। स्वामिश्री भी उस समय सभा में आकर बैठे ही थे। महाराज ने स्वामिश्री पर दृष्टि करी और कहा स्वामी ! तुम जाओ।' महाराज के दर्शन का लोभ तो स्वामिश्री को भी खूब था, परन्तु साथ-साथ महाराज की आज्ञा का उल्लंघन भी किसी कीमत पर नहीं करना—ऐसी अनन्य भक्ति भी स्वामिश्री के हृदय में थी। बेशक, स्वामिश्री को तो महाराज की मूर्ति का अखंड अनुसंधान, अखंड दर्शन अंतर में था फिर भी प्रगट मूर्ति के दर्शन, संबंध की तीव्र इच्छा भी उनके भीतर बहती ही थी ! पर, स्वामिश्री महाराज की यह आज्ञा मानकर एक अनोखा रहस्य समझाना चाहते थे कि ऐसी ब्रह्मस्वरूपणी प्रीति उत्कृष्ट प्रेमलक्षणा भक्ति से भी कई गुणा अधिक है। ब्रह्मस्वरूपणी प्रीति में कोई उछालपन नहीं होता, स्थिरता होती है; अत्यधिकपन नहीं, दिखावा नहीं, पर समता होती है। प्रत्यक्ष स्वरूप के दर्शन, सेवा, समागम का हमें मौका मिले वह हमारी परम धन्यता जरूर है, परन्तु उनके दर्शन, स्पर्श, समागम के लिए हठाग्रह रखना सच्चे सेवक के लिये उचित नहीं।

जूनागढ़ जाने से पहले स्वामिश्री प्रणाम करने महाराज के पास गये। उस समय महाराज क्षौर (शेविंग) करा रहे थे। महाराज को दंडवत् करके स्वामिश्री ने कहाः 'महाराज ! मैं जूनागढ़ जा रहा हूँ।' महाराज स्वामिश्री को देखकर क्षौर कराना बंद कराकर एकदम खड़े हो गये। स्वामिश्री को गले मिले व कहा 'आप जूनागढ़ जा रहे हो तो रास्ते के लिये

प्रसाद–रास्ते में याद करने मेरी बातें व आशीर्वाद लेकर जाओ। सच्चे सेवक के लिये तो अपने प्रभु के दिये वचन ही सही अर्थ में सबसे बड़ा प्रसाद होते हैं। महाराज फिर यह साखी बोलेः

'निर्गुण ब्रह्म सुलभ अति, सगुण न जाणे कोई, सगुण चरित्र नानाविधि, सुनी मुनि मन भ्रम होय।''

दंड यतिन कर भयो जहाँ, नर्तक नृत्य समाज,
जीत्यों मन परा जानीये, रामचन्द्र के राज।
उमा अवधवासी नर-नारी, कृतारथ होय,
ब्रह्म सच्चिदानंद रूप, रघुनाथ जहाँ भूप।

और कहा–'स्वामी जूनागढ़ तुम्हारे साथ या तुम्हारी मदद में या तुम्हारे दर्शन समागम के लिये जो भी आयेगा उसकी करोड़ जन्म की कसर मैं एक ही जन्म में टाल दूँगा।' ऐसा कहकर महाराज स्वामिश्री को गले मिले व खुद की पगड़ी स्वामिश्री को पहनाई। **(क्रमशः)**

ब्रह्मप्रवाह

.....हमें पू. भाई–आपको व मुझे मिलकर–तीव्र प्रार्थना करनी है, तो अब नाव किनारे पर (आ गया) है, सो रास्ता निकलेगा ही।

पू. बापा की लीला का पार नहीं, जो करते होंगे वह (हमारे) अच्छे के लिये।

तो **भजन ही कर लेने जैसा है वह उत्तम बात है,** जिससे जयंती से पहले सबकी स्थिति (ब्राह्मीस्थिति) दृढ़ हो जाये।....भगवान हमारे पास है, सो जरा भी हरकत आयेगी नहीं।

....पू. बापा सब कुछ कर लेंगे। हम तो निमित्त हैं। सबके लिये प्रार्थना चालू है। परिणाम सर्वोत्तम आयेगा।

दादुकाका के
हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण
अप्रिल' 67

卐 卐 卐

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	28.4.90	शनिवार	ब्र.स्व.स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
2.	दि.	3.5.90	गुरुवार	नवमी
3.	दि.	4.5.90	शुक्रवार	प्रगट ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्मजयंती
4.	दि.	5.5.90	शनिवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	21.5.90	सोमवार	एकादशी, व्रत
6.	दि.	22.5.90	मंगलवार	ब्र.स्व. योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at **R.P. PRINTERS**, Shahadra, Delhi-110032